उग्रवाद के उदय के कारण

डॉ. के.के. पटेल
विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर

प्रस्तावनः 19वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में कॉग्रेस की उदारवादी नीतियों के विरुद्ध असन्तोष बढ़ने लगा था। इस समय देश में तथा अन्तर्राष्ट्रीय जगत में ऐसी घटनाएँ हुई जिन्होंने भारतीय नवयुवकों के दृष्टिकोण में आमूल परिवर्तन कर दिया। अब उन्हें उदारवादियों की वैधानिक उपयोगिता के बारे में सन्देह होने लगा था।

उग्रवादियों में भी एक अतिवादी नवयुवकों का वर्ग था जो क्रान्तिकारी उपायों में विश्वास करता था। उनकी क्रान्तिकारी गतिविधियों को सरकार ने दमनात्मक कार्यों से कुचलने का प्रयास किया और भय तथा आतंक के वातावरण को निर्मित किया। इस दमन से उग्रवादी तथा क्रान्तिकारी गतिविधियों में वृद्धि हुई। इन साहसी और बलिदानी क्रान्तिकारियों का भारतीय स्वतन्त्रता के आन्दोलन में महत्वपूर्ण स्थान है।

यह उल्लेखनीय है कि उग्रवादी संवैधानिक उपायों को प्रभावपूर्ण नहीं मानते थे । वे प्रभावशाली और सामूहिक कार्यवाही में विश्वास करते थे। वे छोटे–छोटे संवैधानिक सुधारों की अपेक्षा स्वतन्त्रता चाहते थे । उनका उद्देश्य भारत में ब्रिटिश शासन को समाप्त करना था। वे भारत तथा इंग्लैण्ड के मध्य सम्बन्धों को हानिकारक मानते थे ।

तिलक ने स्पष्ट घोषणा की थी, "विरोध पत्रों से कोई लाभ नहीं होगा। आत्मविश्वास के बिना केवल की नीति अपन विरोध प्रकट करने से जनता का भला नहीं होगा। विरोध–पत्रों और प्रार्थनाओं के दिन लद गये हैं।

जी. एन. सिंह लिखते हैं, "सत्य तो है कि भारतीय जनता के हृदयों में एक नये जीवन का प्रवाह हो रहा था और राष्ट्रीय आन्दोलन एक वास्तविक जन–आन्दोलन का स्वरूप धारण कर रहा था।'

उग्रवाद के उत्थान के कारण

कॉंग्रेस में उग्रवाद के उत्थान के कारण निम्नलिखित थे—

(1) अकाल और प्लेग——उग्रवाद के उत्थान तथा विकास में अकाल तथा महामारी की विशेष भूमिका थी। इस विषय की विस्तृत समीक्षा आवश्यक है तथा इसके परिणामों को समझना भी आवश्यक है। गुरुमुख निहाल सिंह का कथन उचित है, "वर्तमान शताब्दी के प्रथम दस वर्षों में प्रकृति के प्रकोपों ने भी उग्रवादी को पैदा

(i) 1896–97 में दक्षिण भारत में भीषण अकाल पड़ा जिसका प्रभाव 7 करोड़ व्यक्तियों तथा 70,000 वर्ग मील पर था। अनुमान है कि दो करोड लोग मृत्यु और कुपोषण के शिकार हुए। सरकार का सहा अधिकतर पश्चिर्म कार्य अपर्याप्त था और जो कुछ हुआ वह अत्यन्त अव्यवस्थित तथा धीमी गति से हुआ।

(ii) 1899–1900 में भारत के कई भागों में अकाल पड़ा, लेकिन सरकार प्रायः उदासीन और निष्क्रिय रही। सरकार ने दुर्भिक्ष संहिता बनायी लेकिन उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा ।

(iii) अकालों के बार–बार पड़ने की गम्भीरता को इस तथ्य से समझा जा सकता है कि 1876 से 1900 तक के पच्चीस वर्षों में 18 अकाल पड़े। सरकार ने इन भयंकर मानवीय विपत्तियों की भी उपेक्षा और 1878 तथा 1897 में शानदार दरबारों पर पानी की तरह रुपया बहाया गया।

(iv) अकाल की भयंकर आपदा के साथ–साथ 1898 में महाराष्ट्र के पश्चिमी क्षेत्रों में, विशेष हो गई थी। भीषण पूना तथा बम्बई में प्लेग की महामारी फैल गयी। इस रोग के निवारण के लिए सरकार ने उपेक्षा और लापरवाही की नीति अपनायी ।

इस स्थिति का परिणाम यह हुआ कि दो नवयुवकों ने कमिश्नर रेण्ड और उसके सहायक को गोली से उड़ा दिया। तिलक पर हिंसात्मक उत्तेजना फैलाने का आरोप लगाकर अठारह माह का कठोर कारावास दिया गया। सरकार ने समस्त महाराष्ट्र में भीषण दमनात्मक कार्यवाही की ।

(2) सरकार की दमनात्मक तथा प्रतिक्रियावादी नीतियाँ — एक ओर काँग्रेस की सुधार सम्बन्धी माँगों की उपेक्षा हो रही थी, तो दूसरी ओर सरकार दमनात्मक नीति पर चल रही थी जिससे असन्तोष बढ़ता जा रहा था। इंग्लैण्ड में इन वर्षों में अनुदार दल का शासन था जिसे भारत के सुधारवादी आन्दोलन से कोई सहानुभूति नहीं थी। लार्ड लेन्सडाउन के काल में मुद्रा सम्बन्धी कार्य किये गये जिससे भारत को हानि हुई। लार्ड एल्गिन के समय में भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा, जो अंग्रेजों की शोषण नीति का परिणाम था। फिर भी एल्गिन ने अहंकारपूर्वक भारतीयों का अपमान करते

हुए कहा था, "हिन्दुस्तान तलवार के बल पर जीता गया था और तलवार के बल पर ही उसकी रक्षा की जायेगी।" लार्ड कर्जन के काल में कई प्रतिक्रियावादी कानून पारित किये गये जिनका भारतीयों ने विरोध किया। इन कानूनों में कलकत्ता कारपोरेशन एक्ट, विश्वविद्यालय एक्ट, आफीशियल सिक्रेट्स एक्ट विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

(3) प्रजातीय कटुता और अंग्रेजों का अहंकार–उग्रवाद के उत्थान का एक अन्य कारण अंग्रेजों का से भारतीयों के प्रति अहंकारपूर्ण तथा अविश्वास का दृ ष्टिकोण था। भारतीयों का अपमान करना साधारण बात हो गई थी। भीषण अपराधों पर अंग्रेजों के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं होती थी। अंग्रेजी समाचार–पत्र ऐसे अपराधों को प्रोत्साहन देते थे । एक समाचार–पत्र तो भारतीय शिक्षित वर्ग के लिये श्अर्द्धविक्षिप्त बी.ए., 'वर्णशंकर बी. ए., दास जाति, कलंकी जाति आदि अपमानजनक शब्दों का बहुधा प्रयोग करता था। लाई कर्जन ने समस्त भारतीय जाति को अपमानित करने के लिये उसे कुटिल, धूर्त, चालाक और मिथ्यावादी था। उसने तो यहाँ तक कहा था कि "भारतीय राष्ट्र नाम की कोई चीज नहीं है।'

(4) धार्मिक पुनरुत्थान–19वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में धार्मिक पुनरुत्थान के कारण एक ऐसे वर्ग का उत्थान हुआ जो भारतीय संस्कृति को यूरोपीय संस्कृति से श्रेष्ठ समझता था और विदेशी शासन को की दृष्टि से देखता था। उग्रवाद को इस धार्मिक प्रेरणा से शक्ति प्राप्त हुई। इस धार्मिक पुनरुत्थान की प्रेरण स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द, अरविन्द घोष से प्राप्त हुई। वे भारतीय समाज पर बढ़ते हुए पश्चि प्रभाव के विरोधी थे। अरविन्द घोष ने कहा था, "स्वाधीनता हमारा लक्ष्य है और हिन्दुत्व हो हमारी पूरी कर सकता है ।" विवेकानन्द ने शिकागो सम्मेलन में हिन्दू संस्कृति और गौरव को स्थापित किया अ यह तर्क प्रस्तुत किया कि विश्व की सभ्यता का मूल स्रोत भारत है। एनी बेसेन्ट ने भी यह मत व्यक्त किय था कि, "सारी हिन्दू प्रणाली पश्चिमी सभ्यता से बढ़ कर है।" तिलक ने अपने ग्रन्थ "गीता रहस्य" द्वारा कर्मयो के महत्व पर प्रकाश डाला। उपवाद की प्रेरणा का स्रोत यह धार्मिक पुनरुत्थान भी था। उग्रवादी की नेताओ की बौद्धिक तथा भावनात्मक प्रेरणा भारतीय वीरों पर आधारित थी। रवीन्द्रनाथ टैगोर की देशभक्तिपूर्ण रचना बंकिम का आनन्द मठ, तिलक का शिवाजी उत्सव और गणेश उत्सव ने उग्र राष्ट्रवाद के प्रसार में योग दिया लेकिन यह धार्मिक पुनरुत्थान दोषमुक्त नहीं था। गुरुमुख निहालसिंह ने इसे "धार्मिक राष्ट्रवाद" कहा है। जवाहरलाल नेहरू ने लिखा है, "भारतीय राष्ट्रीयता का

1907 का पुनर्जागरण निस्सन्देह प्रतिक्रियावादी क्योंकि इसका आधार भारत की प्राचीन संस्कृति थी ।'

(5) बंगाल विभाजन – लार्ड कर्जन के दमनात्मक कार्यों में अन्तिम कड़ी बंगाल का विभाजन था जिस उपवाद को शक्ति और प्रेरणा प्रदान की। इससे उदारवादियों की स्थिति दुर्बल हुई और उग्रवादियों के तब को बल प्राप्त हुआ। कर्जन का उद्देश्य विभाजन द्वारा भारतीय राष्ट्रवाद को दुर्बल करना था लेकिन इसका उल्ल परिणाम हुआ । इस विभाजन से यह स्पष्ट हो गया कि अंग्रेजों की नीतियों का उद्देश्य अपना साम्राज्यवाद शनियन्त्रण कठोर करना था और भारतीयों के हितों या भावनाओं की उन्हें कोई चिन्ता नहीं थी। सुरेन्द्रनाथ बनर्ज ने लिखा है, "बंगाल का विभाजन हमारे ऊपर बम की तरह गिरा । हमने समझा कि हमारा घोर अपमान किय गया है।" जकारिया ने लिखा है, "उद्देश्य और प्रभाव की दृष्टि से बंगाल के विभाजन का कार्य अत्यन्त धूर्ततापूर्ण था।ष सरकार का कहना था कि यह विभाजन कुशल प्रशासन के उद्देश्य से किया गया था। लेकिन कर्जन व उद्देश्य हिन्दू और मुसलमानों को पृथक् करना था। कर्जन ने पूर्वी बंगाल के मुसलमानों को समझाया था यह विभाजन उनके हितों की रक्षा के लिये किया जा रहा था। डा. रमेशचन्द्र मजूमदार लिखते हैं, "निस्सन्दे यह बंगाल में उत्पन्न होने वाली राष्ट्रीयता की भावना को नष्ट करने की एक वृहद् योजना थी।" जनता विभाजन का दृढ़ता से विरोध किया। इससे बंगाल ही नहीं सारा देश धधक उठा। 16 अक्टूबर, 1905 विभाजन के दिवस को श्काला दिवसश के रूप में मनाया गया, विरोधी सभाएँ की गईं, विदेशी वस्त्र जलाए गये। इससे उग्रवादी राष्ट्रवाद को बढ़ावा मिला।

(6) उदारवादियों की कार्यपद्धति के विरुद्ध असन्तोष–उग्रवाद के उत्थान का एक महत्वपूर्ण कार उदारवादियों की पद्धति और उसके प्रति असन्तोष था। उदारवादियों का उद्देश्य पूर्ण स्वतन्त्रता नहीं था। चाहते थे कि अंग्रेजों की कृपा द्वारा भारत के भाग्य का निर्णय हो। वे ब्रिटेन से तथा उसके साम्राज्य से जु रहना चाहते थे। उन्होंने इस तथ्य को कभी नहीं समझा कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद और भारतीय राष्ट्रवाद में पूर्ण विरोध था। उनको यह भ्रम था कि भारत और भारतीयों के हित एक थे अतः अंग्रेज भारत के कल्याण के कार्य करेंगे। उनके उद्देश्य थे–

(i) प्रतिनिधि शासन की स्थापना करना, (ii) धीरे–धीरे प्रशासनिक व्यवस्था का भारतीयकरण करना (iii) सरकार की नीतियों की तर्कसम्मत परीक्षा करना, (iv) मानव स्वतन्त्रता, गौरव और हितों की रक्षा करना (v) विभिन्न धर्मों तथा वर्गों में सौहार्द स्थापित करना तथा भारतीय राष्ट्रीयता का विकास करना। इन अ में

स्वतन्त्रता की बात कहीं नहीं थी। इनमें अंग्रेजी शोषण तथा अत्याचारों को रोकने की बात नहीं कहीं थी, इसमें ब्रिटिश प्रगतिवाद की निन्दा नहीं की गयी थी। उग्रवादियों ने समस्त उदारवादी दर्शन को अस्वीकार कर दिया।

उदारवादियों की कार्य–पद्धति के प्रति भी गहरा असन्तोष था और इससे उग्रवाद को प्रोत्साहन मिला। उनकी कार्य पद्धति का आधार संवैधानिक उपाय थे। उनकी कार्य पद्धति ब्रिटिश उदारवाद के अनुकरण पर थी। इसमें मुख्य तरीके निम्नलिखित थे। (i) शिकायतों को शान्तिपूर्ण तरीके से प्रस्तुत करना, (ii) हिंसा आदि की उपेक्षा करना, (पपप) इंग्लैण्ड प्रतिनिधि मण्डल भेज कर निवेदन करना, (iv) सुधारों के लिए प्रार्थना करना । उग्रवादी इस भिक्षावृत्ति के विरोधी थे। जनता ने उग्रवादियों का समर्थन किया। उदारवादियों के निवेदन निष्फल रहे। यहाँ तक कि अकाल और प्लेग जैसी महान विपत्तियों में भी वे सरकार की आलोचना नहीं कर सके सरकार की दमन नीति की भी उन्होंने निन्दा नहीं की। उग्रवाद के उत्थान का कारण उदारवादियों के प्रति यही असन्तोष था । तिलक ने उनके सम्मेलनों को श्चापलूसों का सम्मेलनश तथा छुट्टियों को मनोरंजन घोषित किया।

(7) योग्य नेताओं का आविर्भाव–उग्रवाद के उत्थान में अनेक योग्य नेताओं का भी योगदान था जिन्होंने इसे नवीन दिशा दीका अविभागाधर तिलक, उत्पाला लाजपतराय, विपिनचन्द्र पाल और अरविन्द घोष विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं । वे उत्कृष्ट देशभक्त थे और संघर्ष करने को तत्पर थे। वे ब्रिटिश नौकरशाही से घृणा करते थे और अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिये कटिबद्ध थे। उनका मूलमन्त्र स्वराज्य, स्वदेशी और बहिष्कार थे। तिलक ने श्केसरीश पत्र के द्वारा देश–प्रेम, वीरता तथा साहस का प्रचार किया और घोषणा की "स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर रहेंगे।" लाला लाजपतराय ने उदारवादियों की भिक्षावृत्ति की निन्दा की। उन्होंने कहा, "अंग्रेज भिखारी से सबसे अधिक घृणा करते हैं और मैं सोचता हूँ कि एक भिखारी घृणा का पात्र है भी । अतः हमारा कर्तव्य है कि हम यह सिद्ध कर दें कि हम भिखारी नहीं हैं।श विपिनचन्द्र पाल ने भी राजनीतिक भिक्षावृत्ति की निन्दा की।

उग्रवादियों की कार्य पद्धति – उग्रवादियों की कुछ विशेषताएँ जानना आवश्यक है, क्योंकि इसी उनकी कार्य पद्धति को समझा जा सकता है। वे भारतीय संस्कृति में डूबे हुए थे। वे ब्रिटेन और भारत के में टकराव मानते थे। उन्होंने देश में प्रबल राष्ट्रीयता की भावना जागृत की थी। उन्होंने संघर्ष, बलिदान की कष्टों का

मार्ग अपनाया था। वे प्राचीन परम्परा के अनुसार देश का निर्माण करना चाहते थे। उनका विश्वास ईश्वर, देश और आत्मनिर्भरता थी ।

(1) उग्रवादी सक्रिय और सामूहिक विरोध में विश्वास रखते थे। लाला लाजपतराय के अनुसार सक्रिय विरोध के दो लक्षण थे– प्रथम – भारतीयों के हृदय से अंग्रेजों की न्यायप्रियता आदि प्रभावों को समाप्त किया जाये । द्वितीयकृदेशवासियों के हृदय में देश–प्रेम तथा बलिदान की भावनाओं को शक्तिशाली बनाया जाये।

(2) उग्रवादी सहयोग के स्थान पर असहयोग या प्रतिरोध के समर्थक थे। इसमें बहिष्कार, स्वदेश और राष्ट्रीय शिक्षा सम्मिलित थे। इस प्रकार उनकी कार्य–पद्धति संघर्ष करना था ।

(3) उग्रवादियों का मार्ग कष्टपूर्ण था और वे कष्ट सहने, जेल जाने के लिये तैयार थे।

(4) उनकी कार्य पद्धति का आधार संगठन–शक्ति और आत्मनिर्भरता थी। वे जनता को जागृत करके एक प्रबल जन–आन्दोलन के समर्थक थे। हेनरी काटन ने उनके बारे में लिखा था, "उनका उद्देश्य हिंसक ब्रिटिश आन्दोलन का प्रचार करना है और उन्होंने अपनी शक्ति में प्रत्येक साधन से ब्रिटिश शासन को असम्भव बनाया है"।